(2-5-66) ओम प्रातः कलास

रिकार्ड:- भोले नाथ से निराला.... ओम शान्ति। मीठे2 बच्चे जानते है कि ज्ञान का सागर परलौकिक परम पिता परमात्मा हम बच्चो को पढ़ा रहे है। जब यहां बैठते हो तो स्टुडन्ट ही ठहरे। कोई भी कालेज वा स्कूल में स्टुडन्ट आकर पहले से ही बैठ जाते है। समझते है टीचर आया कि आया। अब वो तो मनुष्य टीचर है। सब प्रकार के। चाहे जिसमानी कालेज है चाहे सतसगं है। सतसगं में भी समझेंगे पन्डत अथवा महात्मा आया कि आया। उनका शरीरक नाम भी मालूम रहता है। यहां तुम बच्चे बैठे हो तुम को मालूम है हमारा परलौकिक बाप आते है। यह आत्मा कहती है हमारा शिव बाबा आकर हमको पढ़ा रहे है। अर्थात यह ईश्वरी युनीवर्स्टी है। आगे लिखा भी जात था गाडली युनीवर्स्टी। परन्तु युनीवर्स्टी अक्षर गर्वमेन्ट अलो नही करती है। सचा2 नाम यह था गाडली युनीवर्स्टी। बराबर है भी भगवानो वाचस। अगर कृष्ण होता तो जो बच्चे पढ़ते वह समझते हमको कृष्ण पढ़ाते है। उनका तो नाम रूप हो गया। पत्ति पावन तो है निराकार। वो कैसे आए पढ़ावेगे। कृष्ण को पतित पावन नालेज फुल ज्ञान का सागर नही कहा जाता। गीता पाठशाला में कृष्ण भगवानो वाचस कहेगे। तो ज़रूर स्टुडन्ट समझेगे* अब कृष्ण आया कि आया। कृष्ण तो मोर मुकट धारी है। उनको भगवान कहना तो रागं है। कथाए सुनाते आते है। मै तुम को ईश्वरी ज्ञान देता हूं। और सब तुमको मिथ्या अयर्थात ज्ञान देते आए है। मेरे लिए गलानी करते आए है। बाप के लिए कहना कच्छ मच्छ अवतार यह इन्सलट है नां। भक्ति मार्ग में है ही अन्धर्शथालु। रचता बाप को और देवतायो को डिफेम करते है। इस काण ही ऐसी हालत आकर हुई है। तुम स्टुडन्ट जानते हो शिव बाबा इस रथ में आकर के हमको पढ़ाते है। कल्प2 हम बेहद के बाप से सदां सुख का वर्सा लेते है। गाया भी जात है दुख हर्ता सुख कर्ता। तुम सुख के लिए बेहद के बाप से सिक्षा ले रहे है। फिर तुम्हारी परालब्ध पूरी होगी तो फिर रावण राज्य शुरू होगा। फिर उल्टी गगां बहनु लगती है। उलटी गगां है पानी की। सुलटी गगां है ज्ञान की। उलटी गगां में स्नान करते2 अन्धे उल्लू बन पड़े है। जो सुलटे थे उनको माया उलटा बना देती है। देवता से असुर बना देती है। बाप कहते है हे बच्चो पुन्यात्मा वा पवित्र आत्मा बनना है। आत्मायो को ही आप बैठ समझाते है कल्प पहले मुआफिक। यह पढ़ाई तुम्हारी एक ही वार होती है। मनुष्य से देवता बनना है। भगवान बाप है नां। रचता भी है स्वर्ग का। है ही परम पिता परमात्मा। परम आत्मा को परमात्मा कहा जात है। भक्ति मार्ग में पूजा भी होती है। ऊच ते ऊच परमात्मा है। उनको शिवाय नमः कहेते है। अच्छा कि आयो सूक्ष्म वतन में। तीन लोक है नां। मूल में शिव परमात्मा नमः। जिस के साथ तुम आत्माए निवास करती हो। वो तुम्हारा स्वीट होम है। जंहा फादर रहते है। तो ऊच ते ऊच बाप है। फिर है देवताए। विष्णु देवता नमः। ब्रहमा देवता नमः। बराबर इस समय ब्रहमा देवता तो है नही। इन को कहा जात है प्रजा पिता ब्रहमा। सतयुग में प्रजा पिता ब्रहमा होता नही। प्रजा पिता के बहुत बच्चे होगे। यह तो मनुष्यो की रचना रचने वाला हो गया। ऐसे नही शिव बाबा मनुष्यों की रचना रचते है। उनके सालीग्राम बच्चे है ही है। प्रजा मनुष्यो को कहा जात है आत्मायो को प्रजा नही कहेगे। * साढे 5 सौ करोड़ आत्माए है। प्रजा पिता साकार है। शरीर का रचता प्रजा पिता ब्रहमा। प्रजा पिता है तो सब प्रजा हुई नां। बाप बड़ा होता है। दादा उनसे नीचे। तो बाप दादा दुवारा बच्चो को यह नालेज सुना रहे है। इसको कहा जात है गाडली नालेज। गाड है नालेज फुल। उनका गायन करते है ज़रूर हो कर गए है। गाड ज्ञान का सागर है। ज़रूर था ज्ञान दिया होगा किसको। जब ज्ञान सागर से सर्व की सदगति हुई थी। सतयुग में दुर्गति होती नही। कल्प के सगंम युगे ही बाप आकर सदगति करते है। तुम बच्चे जानते हो नां यह वोही बाबा है। जिससे कल्प पहले वर्सा लिया था। गाते है बाबा हम वोही है जिसने कल्प पहले वर्सा लिया था। और कोई ऐसे कह नां सके। तुम जानते हो हम पिए से वर्सा ले रहे है। गाया भी जाता है निराकार परम पिता परमात्मा। जीव आत्माए

जाकर उन पर अलोटी चढ़ाती है। जरूर होकर गए है कुछ कर के गए है परन्तु जानते नही। भारत
ही तमोप्रधान भ्रष्टाचारी बन गए है। श्रेष्टाचारी उनको नही कहा जाता। जो कपट
अर्थात जिस का शरीर विश्व से पैदा होता है। श्रेष्टाचारी वो जो योग बल से पैदा होते है।
श्रेष्टाचारी कहा जाता। गवर्मेन्ट यह अर्थ नही जानती। सतयुग में भ्रष्टाचारी कोई होता नही। श्रेष्टाचारी फिर
कलयुग मे होता नही। सतयुग में है ही निर्विकारी दुनियां। कहते है क्या बच्चे बड़ो जैसी। और वो है
ही सम्पूर्ण निर्विकारी दुनियां फिर विश्व की बात ही कैसे सकती। तबतो कहते है अमृत छोड़ विश्व कोड़े को
स्वीकार। यह बाप ही समझाते है बच्चे पवित्र बनो। नाम रूप याद करो। वो बाप वर्ल्ड आलमाईटी अथार्टी
है। कृष्ण को आलमाईटी अथार्टी नही कहा जाता। वो तो रचना है। वो बाप है रचता। सर्वशक्ती वान
सर्व पतितो को बाप ही आकर पावन बनाते है। भारत को ही सदगति मिलती है। भारत में थे। सतयुग
में भारत ही होता है उनको ही स्वर्गखण्ड कहा जाता है। बाबा है दुर्ग। वो दुर्ग ही सत्य बताते है। रावण
राज्य मे तो है ही जूठ। जूठ ही बताते। आए है। बाप आकर सत्य बताते है। साधु संत आदि जो थे वो
जगत गुरु अपने को कहलाते है उन जैसे से श्रेष्ठ गुरु तो कोई हो नही सकते। परन्तु किसको समझावे। पंचायती
राज्य है। इन बातो को समझते नही। राजायो में फिर भी अथार्टी रहता थी। यहां एक को समझायो तो
दूसरा बिगड़ पड़े। पंचायती है। वास्तव में पंचायती राज्य भी नही कहा जाता। सावरन्टी तो है नही। एक शिपाही
भी बड़े आदमी की पाग उतार दे। इसको अन्ध युग सरकार कहा जाता है। सब अन्धारे में ठोकरे खाते रहते।
इनको कहा जाता है अन्धो की सरकार। वो है अन्धे की औलाद अन्धे। और यह है सजे की औलाद सजे।
बाबा ने समझाया है। यादव कौरव पाण्डव क्या कहूं पर। यह कब की बात है। यह कोई का पता नही।
कह देते कृष्ण दरबार में आया गीता सुनाई। वास्तव में है संगम की बात। यूरप वासी यादव भी है। स्वर्गपुर
की आदि में तो याद थे नही। वो आए ही बाद में है। जब नाम हो वृद्धि को तब बात। पहले तो धर्मो
की राजाई होती नही। पहले तो बहुत थोड़े होते है, तो बच्चो को पहले यह याद रखना है कि निराकार
शिव बाबा हमको पढ़ाते है। कृष्ण को तो बात होना सके। कृष्ण संगम पर फिर कहां से आ सकता। कोई भी
साधु सन्त आदि नही जानते। साधुयो को निमित्त बनाया है कि भारत को श्रेष्टाचारी बनाते है यह उनको
पता नही कि यह और ही सब को भ्रष्टाचारी बनाने वाले है। यथा गवर्मेन्ट तथा समाज। सब हम धर्म की
औलाद अन्धे। बाप सजा बनाते है माया अन्धा बनाती है। पहले तो यह याद करो। गृहस्थ व्यवहार में रहते
बाप को याद करो। जिससे विकर्म विनाश हो। तुम कर्म योगी हो। कर्म करते हुए बुध योग मेरे साथ लगाओ
सच्चे आशुक बनो माशुक के। घर बार कुछ भी छोड़ना नही है। गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल
समान पवित्र रहो। इसमें ही विघ्न पड़ते है। तब पुकारती है हे बाबा रक्षा करो। हाय द्रोपदीयां है नो। उन
के चीर उतारते है। पतित होने के लिए। सतयुग में ऐसे चीर उतारते नही। ना पुकार होती। जब पतित से पावन
होने का समय आता है तब ही बाप आते है। बन्धेलिया ही बहुत पुकारती है। बाबा हमको नंगन करते है
अब हम क्या करे। यह तो ड्रामा में नूंध है। अत्याचार सहन करने पड़े। मार खाते शिव बाबा को पुकारते
रहती है। उसमें भी कल्याण है। बलहारी मार की जो शिव बाबा को याद कराती है। गन्दो के पाप का घड़ा
जब भरता है तब विनाश शुरु होगा। दिन प्रति दिन अत्याचार बहुत होते है। पाप का घड़ा भरता
है। यह खुल है। कल्प2 होता रहा रहता है। इनको भी देश नही है। पतित असुर लोग बहुत मारे
है। लाचारी हालत में नगंन करते। कर ही क्या सकते। इन परही कर्म जरासंधी शिशुपाल नाम
यह है ही कर्म पूरी। कर्म काम कटारी चलाते है। यह 5 विकार ही आप मय अन्त दुख
है। तुम को भी सीखना होती है। 5 तत्व इस में रहते हो। सतयुग में तो बहुत सु

नई दुनियां को सतयुग पुरानी दुनियां को कलयुग कहा जाता है। यह तो कोई भी मनुष्य जान सकते है नई दुनियां में सब से अच्छे ते अच्छी वस्तु कौन सी है? और पुरानी दुनियां में सब से पुरानी ते पुरानी वस्तु कौन सी है? बाबा बच्चो से प्रश्न पूछ रहे है। एक ही अक्षर में रेस्पान्ड देना है। (दीदी:-नई दुनीयां में सुख शान्ति पुरानी दुनियां मं दुख अशान्ति) (राज:-नई दुनियां में नए ते नई वस्तु है श्री कृष्ण और पुरानी दुनियां में पुरानी ते पुरानी वोही आत्मा यानी ब्रहमा है) राज बच्ची ने ठीक सुनाया। तुम्हारे सामने चित्र खड़े है। नए ते नया विष्णु। वोही आत्मा फिर पुरानी ते पुरानी ब्रहमा। नई दुनियां मे सब से अच्छी वस्तु लक्ष्मी नारायण। अथवा विष्णु के सिवाए और कोई ही नां सके। दिखाते भी है विष्णु की नाभी से ब्रहमा ब्रहमा की नाभी से विष्णु। ब्रहमा से विष्णु बनने में सेकन्ड लगता है। फिर विष्णु से ब्रहमा अर्थात पुराना बनने में पुरा कल्प लग जाता है। शिव बाबा को तो पुराना वा नया नही कह सकते। नया ते नया विष्णु पुराने ते पुराना ब्रहमा। उनके साथ तुम बच्चे भी हो। तुम ही वास्तव में नए ते नए पुराने ते पुराने बनते हो। सतयुग आद से लेकर कलयुग अन्त तक रहते हो। तुम्हारा इस ड्रामा में वन्डर फुल पार्ट है। शास्त्रो में तो यह कुछ भी बाते है नही। वो सब है भक्ति मार्ग के शास्त्र। जिससे दुर्गति को ही पाते आए हो। बड़ा बाप कहते है हमने तुमको विश्व का मालिक बनाया। तुमने फिर सब वेस्ट कर दिया। कहते है बाबा रावण ने हमारी आसुरी बुधि बना दी है। हमतो ड्रामा के वस है। अभी तुम बच्चो को सब मालम है। सारी वल्डकी हिस्ट्री जाग्रापी को जान गए हो। माया रावण की मत पर तुम्हारी कितनी तुच्छ बुधि हो गई है। सवच्छ बुधि है लक्ष्मी नारायण। विष्णु कहने से भी मनुष्य मूझ पड़ेगे। विष्णु के अर्थ का किसको पता नही है। नर नारायण के मन्दिर में आगे नारायण पीछे लक्ष्मी दिखाते है। महा लक्ष्मी की भी पूजा होती है। यह सब बाते बाप ही समझाते है। मुझे कहते ही हो परमआत्मा। पतितो को पावन बनाने वाला चाहिए नां। बाप कहते कहते है मै कल्प //2 कल्प के सगंम युगे आता हूं। आकर पतित से पावन बनाता हूं। अभी बाप दुवारा तुम बच्चे कितने समझु सयाढ़े बनेहो। पढ़ाई ही मनुष्य को चढ़ाती है नां। एडयुकेशन सोस आफ इनकम है। शास्त्रो का भी एक ऐडयुकेशन है। उससे भी वो कमाई करते है। कितने बड़े2 महल बने है गुरु लोगो के। पचलोअस पैसे देते रहते महल बनाते रहते। बाप कहते है क्या मेहनत कर रहे है। यहां तुम क्या मेहनत करते हो। मनुष्यों से तुम पूछो तो सही। यह लक्ष्मी नारायण जो स्वर्ग के मालिक थे। उन्होंने यह पद कैसे पाया। लक्ष्मी नारायण का मन्दिर बनाने वालोको पकड़ो। पकड़ना चाहिए बड़ोको। तुम सब से बड़े थे वोही अब छोटे बनेहो। अब फिर तुमको बड़ाबनाते है। तो उनसे पूछना चाहिए बतायो लक्ष्मी नारायण विश्व के मालिक थे? कैसे बने? अभी तो कलयुग का अन्त है। कुछ भी नही है। तुम समझते हो सोना आद इकठा होगा वा खलास हो जावेगा। इनहो को तो कर्ज़ा देना ही है सोने का। इतना तो दे नां सके। कोई बहुत कर्ज़ा उठाते है और दे नही सकते है तो फिर उन को थमाते आते है। गर्वमेन्ट का भी यही हाल चलरहा है। बाप समझाते है भारत कितना शहुकार था। अब तो बहुत गरीबाद है बड़ी2 कर्ज़ा लेते रहते है। यह भी नई बात नही। कल्प2 ऐसा होता है। कृश्चयन लोग ने तुमसे राजाई ली है। आगे यहां से गेहू बाहर जाति थी ढेर की ढेर। अभी फिर वहा से आ रही है। उन्हो का यहां जैसे दुकान बन गया था बड़ा भारी। भारत सब से बड़ा दुकान था। बहुत कमाई होती थी। वो लोग कितने शाहुकार हो गए है। पहले2 भारत है नां। भारत का ही कनेकशन है कृश्चयन साथ। कृश्चयन औ कृष्ण रास एक ही है। यह लेन देन का हिसाब है। बहुतो ने तुमसे राजाई लेली। अब फिर तुमको लेना है। हिसाब किताब चुक्तु हो जावेगा। कितने शास्त्र मन्दिर आद बनाए है। मन्दिर बनाते है दान पुन्य आद करते पैसा ही बिलकुल खलास कर दिया है। मन्दिरो आद से कुछ होता है क्या? गुरु लोग कितने पैसे लूटते है।